भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 2107
उत्तर देने की तारीख 09.12.2024

भारतीय मूल के व्यक्तियों के साथ सांस्कृतिक जुड़ाव

2107. श्री अरुण गोविल :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, बर्मा, श्रीलंका, बांग्लादेश, दक्षिण अफ्रीका, खाड़ी देशों, अरब देशों तथा फॉर्मर यूनियन ऑफ सोवियत रशिया में रहने वाले भारतीय मूल के तीन करोड़ से अधिक लोग तथा इन देशों में दूसरी, तीसरी तथा चौथी पीढ़ी के कुछ लोग भारत के साथ धार्मिक तथा सांस्कृतिक संबंध बनाए रखने के इच्छुक हैं;

(ख) यदि हां, तो ऐसे देशों तथा वहां रहने वाले भारतीय मूल के लोगों के साथ धार्मिक, भाषाई तथा सांस्कृतिक संबंध बनाए रखने के लिए सरकार द्वारा उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा क्या है; और

(ग) इस कार्य में भारतीय दूतावासों द्वारा क्या भूमिका निभाई जाने की संभावना है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): जी, हां।

(ख) और (ग): संस्कृति मंत्रालय पूरे विश्व में भारतीय कला और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों (सीईपी) पर हस्ताक्षर करता है। ये सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, अन्य देशों के साथ भारत के अंतर-सांस्कृतिक संबंध विकसित और सुदृढ़ करने के लिए भारत की उदार सत्ता (सॉफ्ट पावर) का प्रसार करते हैं। ये सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम संगीत और नृत्य, रंगमंच, संग्रहालयों और विज्ञान संग्रहालयों, पुस्तकालयों, अभिलेखागारों, ऐतिहासिक स्मारकों और पुरातात्विक स्थलों के

संरक्षण और परिरक्षण, साहित्य, अनुसंधान और प्रलेखन, महोत्सव जैसे अन्य विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाते हैं।

संस्कृति मंत्रालय विश्व पटल पर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने और भारत की छवि को हर प्रकार से संवर्धित करने के लिए "वैश्विक भागीदारी स्कीम" नामक स्कीम का कार्यान्वयन करता है। इस स्कीम के तहत, विदेश में 'भारत महोत्सव' (एफओआई) का आयोजन किया जाता है ताकि जन-जन के बीच आपसी जुड़ाव और द्विपक्षीय सांस्कृतिक संबंधों को प्रोत्साहित किया जा सके। विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों से जुड़े कलाकार विदेश में आयोजित 'भारत महोत्सव' में प्रस्तुतीकरण देते हैं।

संस्कृति मंत्रालय विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों और कार्यकलापों के आयोजन के लिए भारत-विदेश मैत्री सांस्कृतिक सोसाइटियों को सहायता अनुदान के माध्यम से भी भारतीय लोक कला, संस्कृति और संगीत का विदेश में प्रचार-प्रसार करता है।

विदेश मंत्रालय का 'डायस्पोरा के साथ सांस्कृतिक संबंधों का संवर्धन (पीसीटीडी)' नामक एक कार्यक्रम है जिसके तहत विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों/पोस्टों को विदेश में बसे भारतीय डायस्पोरा को उनके मूल से जोड़ने की दृष्टि से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए सीमित धनराशि दी जाती है। पीसीटीडी की शुरुआत 2005 में हुई थी और इस पहल के तहत मंत्रालय विदेशों में स्थित भारतीय मिशनों/पोस्टों को अनुदान के प्रावधानों के माध्यम से विदेशों में बसे भारतीय समुदायों के साथ संबंध सुदृढ़ करने, अपनी भारतीय विरासत और संस्कृति को संरक्षित, अनुरक्षित और प्रदर्शित करने के उद्देश्य से उनके द्वारा की गई पहलों में सहायता करता है। स्कीम का उद्देश्य भारत और उसके डायस्पोरा के बीच सांस्कृतिक संबंधों को संवर्धित और सुदृढ़ करना है और भारतीय मूल के व्यक्तियों की सांस्कृतिक पहचान को पुन: प्रबलित करना है। मंत्रालय ने भारतीय संस्कृति, धरोहर और विरासत को प्रदर्शित करने के लिए डायस्पोरा की भागीदारी हेतु मौजूदा वित्त वर्ष में इस स्कीम के तहत विश्व भर के 66 भारतीय मिशनों/पोस्टों को निधियां प्रदान की हैं।

विदेश मंत्रालय के अधीन स्वायत्त संगठन, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) अपने सांस्कृतिक केन्द्रों और विदेश में स्थित मिशनों/पोस्टों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देता है। इनके द्वारा आयोजित कार्यकलापों में अन्य बातों के साथ-साथ, योग, नृत्य, संगीत (गायन और वाद्य), संस्कृत और हिंदी में शिक्षण; भारतीय संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में सम्मेलनों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं का आयोजन/सहायता; विदेशी विश्वविद्यालयों में भारतीय अध्ययनों की पीठें स्थापित करने में सहायता प्रदान करना; महात्मा गांधी और अन्य राष्ट्रीय आइकनों की आवक्ष

मूर्तियां/प्रतिमाएं उपहार स्वरूप देना, दृश्य कला प्रदर्शनियों का आदान-प्रदान करना, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, आयुर्वेद दिवस और भारतीय उत्सव मनाना, भारतीय फिल्मों का प्रचार करना, विभिन्न आगंतुक कार्यक्रमों (शैक्षणिक/प्रतिष्ठित/महत्वपूर्ण/जेन नेक्स्ट डेमोक्रेसी नेटवर्क) के अंतर्गत आगंतुकों की मेजबानी करना; और विभिन्न छात्रवृत्ति स्कीमों के तहत विदेशी छात्रों के लिए छात्रवृत्तियां प्रायोजित करना शामिल है। आईसीसीआर ने विभिन्न राज्य सरकारों के साथ उनकी संस्कृति को विदेश में संवर्धित करने और विदेशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदानों को सुविधाजनक बनाने हेतु समझौता ज्ञापन भी संपन्न किए हैं। आईसीसीआर भारत में आने वाले विदेशी सांस्कृतिक मंडलियों की भी मेजबानी करता है ताकि भारतीयों को अन्य देशों के संबंध में जानकारी प्राप्त हो सके।

*****